भाकृअनुप ICAR

सी एम एफ आर आइ CMFRI

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. 146 जुलाई - सितंबर 2015 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार (2014-15) प्राप्त करने का दृश्य

कृपया पृष्ठ सं. 11 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

विषय सूची

कडलमीनच्र समुद्री शैवालों से मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe)	3
कोच्ची में एन आइ सी आर ए की वार्षिक पुनरीक्षण बैठक	4
अनुसंधान मुख्य अंश	5
प्रशिक्षण / विस्तार कार्यक्रम	10
राजभाषा कार्यान्वयन	11
स्वच्छ भारत	12
मनोरंजन क्लब की कार्यविधियाँ	13
प्रमुख व्यक्तियों / आगंतुकों का मुआइना	14
पुरस्कार	14
प्रकाशन	15
कृ वि कें (एरणाकुलम) के समाचार	16
कार्यक्रम में सहभागिता	17
मानव संसादन विकास	18
कार्मिक समाचार	19

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष : 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मैल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यु. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी अनुवाद

ई. के. उमा

निदेशक कहते हैं

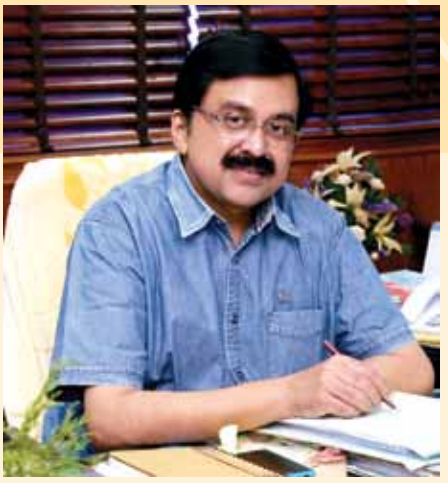

सबको हार्दिक नमस्कार

संस्थान द्वारा समुद्री शैवालों से एक प्रमुख न्यूट्रास्यूटिकल, कडलमीन™ मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe) विकसित किया गया है और हाल ही में संपन्न हुए भा कृ अनु प के स्थापना दिवस समारोह के दौरान इसका औपचारिक रूप से लोकार्पण किया गया। अध्ययनों से यह व्यक्त हुआ है कि यह उत्पाद टाइप II डायबेटिस का प्रभावकारी अवरोधक है और मधुमेह रोग की पीड़ाओं से छुटकारा पाने के लिए शक्य स्रोत है। इस अवधि के दौरान संस्थान ने एन आइ सी आर ए (जलवयायु लचीला कृषि पर राष्ट्रीय नवोन्मेष) परियोजना की 4वीं वार्षिक समीक्षा बैठक सफल ढंग से आयोजित की, जिसमें भारत के विभिन्न भागों में कृषि, पशुपालन एवं मात्स्यिकी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकारों ने भाग लिया। संस्थान में प्राथमिक गुणभोक्ताओं जैसे मछुआरों की समस्याओं को समझने और बेहत्तर ढंग से सुलझाने के लिए मछुआरों तथा वैज्ञानिकों के बीच नवोन्मेषी संसूचना मंच शुरू किया गया। केरल सरकार के मात्स्यिकी विभाग के अनुरोध पर संस्थान में उपलब्ध डाटा बेस के विश्लेषण के आधार पर 57 मछली प्रजातियों का न्यूनतम विधिक आकार (एम एल एस) नियत किया गया। यह उल्लेखनीय है कि टिकाऊ मात्स्यिकी को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान द्वारा परामर्शित एम एल एस जुलाई, 2015 में सरकारी अधिसूचना द्वारा 14 प्रमुख मछली प्रजातियों के लिए लागू किया गया। तमिल नाडु में समुद्री मछली उत्पादन बढ़ाने हेतु कृत्रिम भित्ति मोड्यूलों का विनियोजन सी एम एफ आर आइ की तकनीकी सहायता से राज्य मात्स्यिकी विभाग द्वारा किया गया और इस पर मछुआरों के बीच अच्छी प्रतिक्रिया थी। संस्थान को वर्ष 2014-15 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ। उक्त अवधि के दौरान संस्थान के कर्मचारियों ने स्वच्छ भारत जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया। संस्थान ने हाल ही में निधन हुए भूतपूर्व निदेशक डॉ.एस.इज़ेड. क्वासिम को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अ गोपाल

डॉ.ए.गोपालकृष्णन
निदेशक

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

कडलमीन™ समुद्री शैवालों से विकसित मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe) का लोकार्पण

भा कृ अनु प स्थापना दिवस समारोह के दौरान कडलमीन™ मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe) के लोकार्पण का दृश्य

कडलमीन™ मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe), जो संस्थान द्वारा समुद्री शैवालों से विकसित टाइप II डायबेटिस रोकने की क्षमता युक्त न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद है। पटना में दिनांक 26 जुलाई, 2016 को आयोजित भा कृ अनु प के स्थापना दिवस समारोह में माननीय केन्द्र कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा इस औषध का लोकार्पण किया गया। पात्रे (*इन विट्रो*) परीक्षणों से यह व्यक्त हुआ है कि सक्रिय तत्वों ने डाइपेप्टिडाइल डाइपेप्टिडेस, ट्रयोसिन फोस्फटेस, अमिलेस और α-ग्लूकोसिडेस को रोका। परीक्षणों के परिणाम यह दिखाते हैं कि न्यूट्रास्यूटिकल में विभिन्न उपापचय मार्गों द्वारा टाइप II डायबेटिस को प्रेरित करने में उत्तरदायी मध्यस्थ घटकों को प्रभावकारी ढ़ंग से रोकने की क्षमता है। समुद्री शैवालों से विकसित उत्पाद का स्ट्रेप्टोज़ोटोक्सिन (मधुमेह प्रेरक) दिए गए जीवों में परीक्षण करने के बाद मानक दवाओं के साथ इसकी तुलना की गयी। मधुमेह नियंत्रण का ग्लूकोस स्तर 380 mg/dL से अधिक था, जबकि जीवों में जैव सक्रिय फार्मकोफोर देने पर रक्त में ग्लूकोस का स्तर लगभग 74 mg/dL (74 mg/kg शरीर भार) था। जीवों में न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद दिए जाने पर HbAlc स्तर 4.6% (साधारण स्तर 4.3-6.3% है)। पूर्व नैदानिक परीक्षणों से यह देखा गया कि वृक्क तथा जिगर, और रुधिर संबंधी कार्यों में विषाक्तता से संबंधित कोई भी परिवर्तन नहीं थे। परिणामों से यह भी सिद्ध हुआ कि दवा 2000 mg/kg/d से अधिक खुराक में देने पर साधरण अंगों से संबंधित परीक्षण पदार्थ की कमी या सिस्टमिक विषाक्तता और क्रमिक विषाक्तता और हाइपोग्लाइसेमिक अव्यवस्था नहीं थी। दृढ़ जेलेटिन कैप्स्यूल के प्रति पात्रे डिसोलूशन सुधार करने के प्रयास के रूप में जीवों से व्युत्पन्न जेलेटिन के स्थान पर सक्रिय संघटकों को हाइड्रोक्सीप्रोपाइल मीथाइलसेलुलोस कवचों (हाइप्रोमेलोस) में संपुटित किया गया। जेलेटिन और औषध के आपस में मिलन की असंगतियों से जुड़ी हुई हानियों और जीवों से व्युत्पन्न जेलेटिन, जिसमें बोवाइन स्पंजिफोर्म एनसेफलोपती / ट्रान्समिसिबिल स्पंजिफोर्म एनसेफलोपती की आवश्यकता की कमी है, के उपयोग से संबंधित कडा नियमन होने की वजह से हाइड्रोक्सीप्रोपाइल मीथाइलसेलुलोस का उपयोग किया गया। उत्पाद में होने वाले ओक्सिडेटीव परिवर्तन की पहचान करने के लिए समय पर निर्भर शेल्फ लाइफ अध्ययन किया गया, जिससे यह व्यक्त हुआ कि अध्ययन की अवधि की समाप्ति तक न्यूट्रास्यूटिकल की प्रति मधुमेह गतिविधियों और जैव सक्रिय तत्वों के घटकों में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं थे। एक फैक्टरी यूनिट में कच्चा माल से बड़े पैमाने में सक्रिय तत्वों का सार निचोडने के कार्य का अनुकूलन किया गया है। फैक्टरी यूनिट में कच्चा माल से सक्रिय तत्वों की कुल प्राप्ति 20% से अधिक देखी गयी, जो न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद की वाणिज्यिक साध्यता व्यक्त करती है। इस उत्पाद का लाइसेन्स प्रमुख कंपनी को दिया जा रहा है।

(समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

माननीय केन्द्र कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह को समुद्री शैवालों से विकसित न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद डॉ. एस. अय्यप्पन, महा निदेशक, भा कृ अनु प द्वारा प्रदान करते हुए

कोच्ची में एन आइ सी आर ए की वार्षिक पुनरीक्षण बैठक का आयोजन

जलवायु लचीला कृषि पर राष्ट्रीय नवोन्मेष (एन आइ सी आर ए) विषयक नेटवर्क अनुसंधान परियोजना की चौथी वार्षिक पुनरीक्षण कार्यशाला दिनांक 13-14 अगस्त, 2015 के दौरान सी एम एफ आर आइ में आयोजित की गयी।

बैठक में भा कृ अनु प के 34 संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (एस ए यु) से कुल 186 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प), नई दिल्ली द्वारा दिनांक 13 अगस्त, 2015 को किया गया। भा कृ अनुप के संबंधित विषयों के प्रभागों (एस एम डी) के उप महानिदेशकों (डी डी जी), एस ए यु के कुलपतियों, भा कृ अनु प के संस्थानों के निदेशकों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया। सी एम एफ आर आइ को चालू वर्ष के दौरान एन आइ सी आर ए परियोजना के अंदर उत्कृष्ट निष्पादन के चार संस्थानों में एक के रूप में सम्मानित किया गया।

एन आइ सी आर ए की वार्षिक पुनरीक्षण कार्यशाला के उद्घाटन कार्यक्रम का दृश्य

कार्यशाला के दौरान पांच तकनीकी सत्र आयोजित किए गए और डॉ. ए. के. सिक्का, डी डी जी (प्राकृतिक संपदा प्रबंधन), डॉ. ए. के. सिंह, कुलपति, आर वी एस के वी वी, डॉ. बी. वेंकटेश्वरुलू, कुलपति, वी एन एम के वी पी, डॉ. ए. के. सिंह, डी डी जी (कृषि विस्तार), भा कृ अनु प, डॉ. एस. एम. वीरमणी, अध्यक्ष, प्रायोजित एवं प्रतियोगी अनुदान घटक के लिए विशेषज्ञ समिति, डॉ. जे. एस. सन्धु, डी डी जी (सी एस), भा कृ अनु प और प्रोफसर एम. उदय कुमार, सदस्य, विषयगत विशेषज्ञ समिति ने इन सत्रों की अध्यक्षता की। मात्स्यिकी से संबंधित सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. के. वास, सदस्य, एन आइ सी आर ए प्रायोजित एवं प्रतियोगी अनुदान घटक के लिए विशेषज्ञ समिति द्वारा की गयी। डॉ. एस. एम. वीरमणी ने पूर्ण अधिवेशन की अध्यक्षता की और इसके बाद बैठक समाप्त हुई। अन्य विशेष व्यक्ति डॉ. ए. के. सिक्का, डॉ. श्रीनिवास रावु, निदेशक, सी आर आइ डी ए और डॉ. एन. के. कृष्णकुमार, डी डी जी (बागवानी विज्ञान) और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ थे।

डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक और डॉ. पी. यु. ज़क्करिया, पी आइ, एन आइ सी आर ए को सम्मानित करते हुए

केरल सरकार द्वारा लागू किए गए न्यूनतम विधिक आकार (एम एल एस)

सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर पिछले वर्ष संस्थान ने केरल सरकार को पख मछलियों और कवच मछलियों की 58 प्रजातियों के न्यूनतम विधिक आकार (एम एल एस) के लिए सिफारिश की। इसके आधार पर सरकार ने जी आइ ओ (पी) सं. 40/15/ एफ एंड पी डी दिनांक 24.07.2015 के द्वारा केरल में किशोर मछलियों का विदोहन रोकने के प्रथम प्रयास के रूप में 14 मछली प्रजातियों के लिए एम एल एस लागू किया है। किशोर मछलियों को संरक्षित करने, अंडजनन स्टॉक को कायम करने और पकड़ी गयी मछलियों के आकार को नियंत्रित करने की क्षमता युक्त एम एल एस का मतलब किसी मछली जाति का पकड़ी गयी अवस्था में रखने का विधिक आकार है। इस का लागू किए जाने से मात्स्यिकी की आर्थिक क्षमता में वृद्धि हो जाएगी और इसके साथ साथ किशोर मछलियों को बडे आकार और भार तक बढ़ने का संरक्षण भी हो जाएगा।

एकीकृत बहु पौष्टिक जलकृषि पर एन आइ सी आर ए निदर्शन

वैज्ञानिक एवं किसान लोग कोबिया मछली पिंजरों के साथ एकीकृत बेड़ाओं से संग्रहित शैवाल रस्सी के साथ

एन आइ सी आर ए परियोजना के अंदर, मनैकाडु (पाक उपसागर) में मछुआरों के सहभागिता तरीके से कोबिया मछली के साथ समुद्री शैवाल *काप्पाफाइकस अल्वरेज़ी* को एकीकृत करते हुए एकीकृत बहु पौष्टिक जलकृषि (आइ एम टी ए) का सफलतापूर्वक निदर्शन किया गया। पालन अवधि के 45 दिनों के बाद 17 सितंबर, 2015 को समुद्री शैवालों का पहला संग्रहण किया गया। कोबिया मछली के पिंजरों के साथ एकीकृत समुद्री शैवाल के बेड़ाओं के शैवालों का गीला भार प्राथमिक 1200 कि.ग्रा. की अपेक्षा 4640 कि.ग्रा. था, जबकि एक मीटर की गहराई में (एकीकृत करने के बिना) रखे गए बेड़ों से संग्रहित शैवालों का भार प्राथमिक 300 कि. ग्रा. की अपेक्षा 600 कि.ग्रा. था। यह आकलित किया गया कि कोबिया मछली के पिंजरों के साथ एकीकृत समुद्री शैवाल बेड़ाओं से प्रति बेड़ा में 290 कि.ग्रा. की दर पर और बिना एकीकृत बेड़ाओं से 150 कि.ग्रा. की दर पर समुद्री शैवालों का संग्रहण किया गया। इस प्रकार कोबिया पिंजरों के साथ एकीकृत किए जाने से प्रति बेड़ा से 140 कि.ग्रा. अतिरिक्त समुद्री शैवाल प्राप्त हुए। कुल 20 बेड़ाओं से संग्रहित कुल 5240 कि.ग्रा. समुद्री शैवालों में से 1500 कि.ग्रा. शैवालों को अगले पालन चक्र के लिए संतति सामग्रियों के लिए उपयुक्त किया जाएगा। बाकी 3740 कि.ग्रा. शैवालों को प्रति किलोग्राम शैवाल के लिए 10 रु. की दर पर 37400/- रुपए के आय पर बेच दिया गया। कई वर्षों के बाद समुद्री शैवालों का अच्छा संग्रहण प्राप्त करने में सहायता प्रदान करने के लिए मछुआरा ग्रुप ने सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र को कृतज्ञता प्रकट की।

(ए. के. अब्दुल नासर, आर. जयकुमार, जी. तमिलमनी, एम. शक्तिवेल, पी. रमेशकुमार, जोनसन बी., अमीर कुमार सामल और के. के. अनिकुट्टन, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

मछुआरा स्वयं सहायक संघों द्वारा सफलतापूर्वक समुद्री पिंजरा मछली पालन

तमिल नाडु के रामनाथपुरम जिला प्रशासन ने स्टेट बालन्स्ड ग्रोथ फन्ड के अंदर 10 मछुआरा स्वयं सहायक संघों (एस एच जी) को समुद्री पिंजरों में कोबिया मछली पालन के लिए प्रति ग्रुप को दो पिंजरों के लिए 90 प्रतिशत सहायिकी से सहायता प्रदान की। सभी 10 ग्रुपों ने मार्च से मई महीनों के दौरान पालन कार्य शुरू किया। इन ग्रुपों का एक हिताधिकारी श्री एफ्रेम ने मरकयारपट्टिणम में मार्च 2015 में कोबिया मछली का पिंजरा पालन शुरू किया और 23 सितंबर, 2015 को पहला भागिक संग्रहण किया गया। श्री के. नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम ने संग्रहण का उद्घोटन किया। पहले भागिक संग्रहण में लगभग 100 किलोग्राम कोबिया मछली, जिनका औसत भार 1.5 कि. ग्रा. था, पकड़ी गयी और रु. 250/कि.ग्रा. का फार्म गेट मूल्य प्राप्त हुआ। बाकी कोबिया मछलियों का संग्रहण आगामी दिनों में किया गया। कोबिया मछली पालन के प्रचार के लिए संस्थान द्वारा किए गए पहल के फलस्वरूप इस क्षेत्र में 16 ग्रुपों ने अब 43 समुद्री पिंजरों में कोबिया मछली पालन शुरू किया है।

श्री के. नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम, श्री एम. काशिनाथपान्डियन, मात्स्यिकी उपनिदेशक और डॉ. आर. जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक और हिताधिकारी मछली संग्रहण के साथ

(ए. के. अब्दुल नासर, आर. जयकुमार, जी. तमिलमनी, एम. शक्तिवेल, पी. रमेशकुमार, जोनसन बी., अमीर कुमार सामल और के. के. अनिकुट्टन और एस. चन्द्रशेखर, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

कोबिया और सिल्वर पोम्पानो के उंगलिमीनों का स्थानांतरण

आंध्रा प्रदेश और केरल के मछुआरों / उद्यमियों को जुलाई से सितंबर, 2015 की अवधि के दौरान सिल्वर पोम्पानो के कुल 42825 उंगलिमीनों की पूर्ति की गयी। इसके अतिरिक्त सिल्वर पोम्पानो के 10000 और 1200 उंगलिमीनों को क्रमशः सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र और सी आइ एफ ई रोहतक केन्द्र को स्थानांतरित किया गया। इसी अवधि के दौरान कोबिया मछली के 585 उंगलिमीनों को तमिल नाडु के मछुआरों को प्रदान किया गया।

एस एच जी द्वारा पालन किए गए शंबुओं का सफल विपणन

पुत्तनवेलिक्करा के तटीय क्षेत्र में शुक्ति पालन में लगे हुए एक महिला स्वयं सहायक संघ (डब्लियु एस एच जी) ने वर्ष 2014-15 में शंबु पालन शुरू किया और लगभग 1200 कि. ग्रा. शंबु का सफलतापूर्वक संग्रहण किया, जिनका शुद्धीकरण करके और ताप में कवच निकाले गए मांस के रूप में अध कवच सहित या बिना कवच से पैक करके बेच दिया गया।

डॉ. के. एस. मोहम्मद, अध्यक्ष, मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग ऐश्वर्या एस एच जी को विपणन का लाभांश प्रदान करने का दृश्य

कृत्रिम भित्ति मोड्यूलों का विनियोजन

तमिल नाडु मात्स्यिकी विभाग के लिए परामर्श परियोजना "तमिल नाडु तट के 17 गाँवों के अपतटीय समुद्र में कृत्रिम भित्ति का विनियोजन" के अंदर उत्तर जून-सितंबर 2015 के दौरान तमिल नाडु के 17 स्थानों में कृत्रिम भित्ति मोड्यूलों का विनियोजन किया गया। तिरुवल्लूर जिला के तीन गाँवों, कांचीपुरम जिला के चार गाँवों, कडलूर जिला के दो गाँवों, नागपट्टिणम जिला के पांच गाँवों, पुतुकोट्टै जिला के दो गाँवों और तूत्तुकुडी जिला के एक गाँव में मोड्यूलों का विनियोजन किया गया। हर एक स्थान में दो सौ मोड्यूलों का विनियोजन किया गया।

(जो के. किषकूडन, के. विजयकुमारन, शोभा जो किषकूडन, आर. गीता, एस. मोहन और आर. सुन्दर, मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

पोत में मोड्यूल लॉड करके विनियोजन करने का दृश्य

मोती मात्स्यिकी रोध के बाद मन्नार खाड़ी से प्राकृतिक मोती की असाधारण उपस्थिति

मन्नार खाड़ी के कायलपट्टिणम के समुद्र के 4 मीटर की गहराई से नितलस्थ गिल जाल द्वारा उप पकड़ के रूप में मुक्ता शुक्ति (*पिंक्टाडा फ्यूकेटा*) का अवतरण किया गया और ऊतक संवर्धन अध्ययन के लिए इनका संग्रहण किया गया। इनके मैन्टिल टिश्यू का विच्छेदन करने पर मुक्ता शुक्ति के मैन्टिल के मोड़ में एक अच्छा, शोभायमान, वृत्ताकार और 1.5 मि. मी. के आकार वाला मोती देखा गया। मोलस्क में प्राकृतिक मोती का बनावट पर्यावरण के प्रभाव से हाने वाली अचानक घटना है। पक्का प्राकृतिक मोती बनने की संभावना दस लाखों में एक है। मन्नार खाड़ी की मुक्ता शुक्तियों द्वारा उत्पादित प्राकृतिक मोती उत्तम "चमकदार मोती" माना जाता है और यह अत्यधिक मूल्यवान भी है। वर्ष 1961 से लेकर मुक्ता शुक्ति मात्स्यिकी का रोध लागू होने के कारण दशकों से लेकर प्राकृतिक मोती की उपस्थिति की रिकार्ड नहीं की गयी है।

(सी. पी. सुजा, ब्रिडजेट जेयता डब्लियु., कोनसीस मेरी बी. और जेन्सी पोन्मलर जे., टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

भारतीय पोम्पानो का प्रग्रहण स्थिति में परिपक्वन

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र की पुनःचक्रण जलकृषि व्यवस्था में रखी गयी 3.5-4 कि. ग्रा. भार वाली दो मादा और एक नर भारतीय पोम्पानो (*ट्रकिनोटस मूकाली*) मछलियाँ प्रग्रहण की 3 महीनों के अंदर परिपक्व हो गयीं। भूमि पर आधारित अंडशावक अनुरक्षण व्यवस्था के विकास के लिए यह सहायक निकलेगा।

विंग्ड मुक्ता शुक्ति के डिंभक पालन में पहली बार सफलता

सामान्यतः विंग्ड मुक्ता शुक्ति नाम से जाने जाने वाला वंश *प्टीरिया चमकदार* मदर मोती की वजह से परंपरागत तौर पर बिंबित मोती उद्योग में प्रसिद्ध है। ऊतक संवर्धन के लिए मन्नार खाड़ी से संग्रहित *प्ट ीरिया ब्रेवियालेटा* ने संग्रहण के 24 घंटों के बाद स्वाभाविक रूप से अंडजनन किया। निषेचित अंडे 4 घंटों के बाद मोरुला अवस्था और 24 घंटों के बाद 50 µm के D आकार के डिंभक के रूप में बदल गए। लगभग 120,000 डिंभकों को 30 µm द्वारा संग्रहित करके प्लास्टिक के नालियों में 2 डिंभक / मि. लि. की संभरण सघनता में रखा गया। इनको आहार के रूप में समुद्री सूक्ष्मशैवाल *आइसोक्राइसिस गालबाना*, *पावलोवा लुतेरी* और *क्रोमुलिना फ्रीबर्गेन्सिस* अलग अलग रूप से दिया गया। सातवां दिन 90 µm के आकार का पहली अम्बोनिक अवस्था देखी गयी, 17वां दिन आइ स्पोट अवस्था (150 µm), 19वां दिन पेडिवेलिगर (190 µm), 21वां दिन प्लन्टीग्रेड (250 µm) अवस्था देखी गयी और 23वां दिन 270 µm आकार का स्पैट बन गया। मुक्ता शुक्ति *पिंक्टाडा फ्यूकेटा* की जीवसंख्या कम होने के कारण मान्नार खाड़ी में प्टीरिया प्रजाति की सामान्य उपस्थिति और स्फुटनशाला में इस प्रजाति के डिंभक पालन तकनीक की जानकारी मोती उद्योग में एक बदल उपाय के रूप में सहायक सिद्ध होगा।

(सी. पी. सुजा, जे. जेन्सी पोन्मलर, डब्लियु. ब्रिडजेट जेयता, और बी. कोनसीस मेरी, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

D -आकार का डिंभक

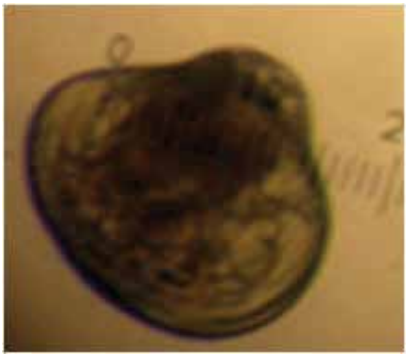

पेडिवेलिगर

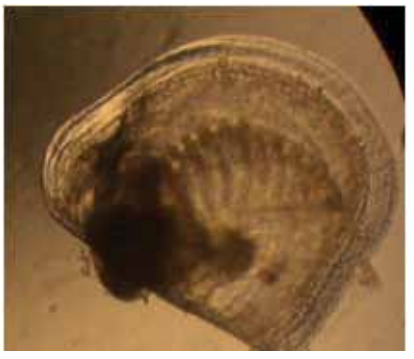

30वां दिन का स्पैट

अंत:स्थलीय कम लवणता जल में सिल्वर पोम्पानो मछली का नर्सरी पालन परीक्षण

गुजरात के तट के चिंगट तालाबों में सी एम एफ आर आइ द्वारा किए गए सिल्वर पोम्पानो मछली (*ट्रकिनोटस ब्लोची*) के पालन निदर्शन की ओर स्थानीय मछुआरों और उद्यमियों का ध्यान आकर्षित हुआ। शीतकालीन मौसम में, जब चिंगटकी कम बढ़ती दर की वजह से चिंगटपालन बंद होता है, तब पालन के लिए बदल प्रजाति के रूप में इस मछली का प्रचार बढ़ जाता है। मांस की गुणता और पाम्फ्रेट मछली की समानता से बडे शहरों में इस मछली की बढ़ती मांग है और इस कारण से सिल्वर पोम्पानो के पालन की और अभिरुचि बढ़ गयी है। शीतकालीन मौसम में उच्च लवणता के चिंगट तालाबों में इस मछली के पालन की साध्यताओं का परीक्षण अंत:स्थलीय कम लवणता के जलाशयों में भी किए जाने का परीक्षण किया गया। नर्सरी पालन और पालन के नयाचार का मानकीकरण करने के लिए पोम्पानो मछली के 10,000 संततियों को वेरावल तक ले गया। इनका अनुकूलन करने के बाद 20 x 5 x 2 मी. के व्यास वाले सिमेन्ट के टैंकों में छोड दिया गया। लगभग 36 घंटों के परिवहन के बाद भी अच्छी अतिजीविता देखी गयी। वेरावल के धारी में चिंगट पालन तालाबों में मछली संततियों का नर्सरी पालन प्रगति पर है।

सिल्वर पोम्पानो मछली संततियों का अनुकूलन

(दिवु डी., के. मोहम्मद कोया, सुरेश के. मोज्जादा, विनय कुमार वास, ज्ञान रंजन दास, श्रीनाथ के. आर. और महेन्द्र डी. फोफान्डी, वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

कर्नाटक के तट पर बलीन तिमियों का धंसन

कर्नाटक तट पर बलीन तिमियों का धंसन देखा गया। वर्ष में पहली बार दिनांक 23.07.2015 को उल्लाल पुलिन पर और इसके बाद दिनांक 30.07.2015 को तन्नीरभवी पुलिन और भटकल पुलिन पर और दिनांक 06.08.2015 को माल्पे पुलिन पर धंसन की रिपोर्ट की गयी। ये सभी तिमियाँ सड़ गयी अवस्था में थीं और इससे यह संकेत मिलता है कि समुद्र में ही इनकी मृत्यु या चोटहुई होगी और मानसून के शक्त तरंगों से तट पर आयी होंगी। धंस गयी तिमियों की औसत लंबाई 12 और 15 मी. के बीच थी।

माल्पे पुलिन पर धंस गयी मृत तिमि का दृश्य

पिंजरे में करंजिडों के पालन की साध्यता पर अध्ययन

कर्नाटक में खारा पानी जलकृषि के लिए *कैरांक्स सेक्सफासिएटस* (बिगआइ ट्रवेल्ली) के पालन की सध्यता का मूल्यांकन किया गया। उप्पुन्डा नदीमुख में खूब पाए जाने वाले मछली संततियों का संग्रहण करके नाइलोन जाल से आवृत नेटलोन (30 मी. मी. का जालाक्षि आकार) से बनाए गए दो पिंजरों (4 x 2 x 2 मी.) में संभरित किया गया। प्रति पिंजरे में 300 मछलियों की दर पर संभरण करके शरीर भार के 6-8% की दर में कम मूल्य वाली क्लूपिड मछलियों से खिलाया गया। लगभग 150-180 दिनों की पालन अवधि के बाद मछलियाँ 300-450 ग्राम के आकार तक बढ़ गयीं। छः महीनों के अंत में 90% अतिजीवितता के साथ लगभग 150 कि.ग्रा. मछलियों का संग्रहण किया गया। मछलियों की बढ़ती दर आशाजनक थी और अच्छी बाज़ार मांग होने वाली इन मछलियों के लिए प्रति किलोग्राम को 350-400 रुपए की दर में मूल्य प्राप्त हुआ। यह प्राकृतिक स्थानों से बिगआइ ट्रवेल्ली के जीवित संततियों का संग्रहण करके पिंजरों में पालन करने का प्रथम उदाहरण है। आकलनों से यह संकेत मिलता है कि यह तटीय क्षेत्रों में पिंजरों में संवर्धन करने लायक मछली प्रजाति है।

(के. एम. राजेश, सुजिता तोमस, ए. पी. दिनेश बाबु, प्रतिभा रोहित और जी. डी. नटराजा, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मुक्ता शुक्ति स्पैटों के नर्सरी पालन के लिए प्रभावकारी माइक्रोन जालाक्षि युक्त पिंजरे

मुक्ता शुक्ति *पिंक्टाडा फ्यूकेटा* उच्च मांग और मूल्य होने वाले समुद्री मोतियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। स्फुटनशाला में उत्पादित स्पैटों को उपयुक्त करके कम लागत में मुक्ता शुक्ति संततियों का उत्पादन करने के लिए नर्सरी पालन के परीक्षण आयोजित किए गए। एक टन की क्षमता युक्त एफ आर पी टैंकों में प्रति टैंक में 50000 स्पैटों की संभरण सघनता में 45 दिनों का पालन करने पर शुक्ति स्पैट 4.1 के पृष्ठाधर मापन (डी वी एम), 4 मि. मी. की औसत हिंच लंबाई (एच एल) और 0.005 ग्राम के औसत भार तक बढ़ गए। नर्सरी पालन परीक्षण के लिए 3 टैंकों के स्पैटों को प्रति टैंक में 50000 स्पैटों की संभरण सघनता में माइक्रोन जालाक्षि पिंजरों में स्थानांतरित किया गया। विषिंजम उपसागर में 60 x 16 से. मी. के आयाम (लंबाई x व्यास) और 3 मि. मी. के जालाक्षि आकार हाने वाले पिंजरे बेड़ों में लगाए गए। एक महीने के बाद स्पैट 95% की अतिजीवितता के साथ 5.24 मि. मी. के औसत डी वी एम, 4.82 के औसत एच एल और 0.0092 ग्राम के औसत भार तक बढ़ गए। लेकिन स्फुटनशाला में पालन किए गए स्पैटों में पिंजरे में पालन किए गए स्पैटों की तुलना में इस तरह की वृद्धि नहीं देखी गयी (4.3 मि. मी. का औसत डी वी एम, 3.9 मि. मी. का एच एल और 0.0042 ग्राम का औसत भार)।

माइक्रोन जालाक्षि युक्त पिंजरे में पालन किए गए मुक्ता शुक्ति स्पैट

(विषिंजम अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

आन्डमान से काले अधर वाली मुक्ता शुक्ति स्टॉक का परिवहन

आन्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह के मराइन हिल, पोर्ट ब्लेयर के शुक्ति संस्तरों से सितंबर महीने के पहले सप्ताह के दौरान निमज्जकों की सहायता से संग्रहित *पिंक्टाडा मार्गरिटिफेरा* के बीस नमूनों को चेन्नई पहुँचाया गया और पात्रे (*इन विट्रो*) मोती उत्पादन परीक्षणों के लिए कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में रखा गया। शुक्तियों का आकार परास 65 से 86 मि. मी. तक था। शुक्तियों को एफ आर पी टैंकों में उचित प्रकार के वातन और पानी के विनिमय के साथ अलग अलग बाल्टियों में लटकाया गया ताकि इनका परेशान न करके टैंक साफ किया जा सके। शुक्तियों को मिश्रित शैवालों से दिन में तीन बार खिलाया गया और 15 दिनों में एक बार साफ किया गया। सभी बीस नमूने स्वस्थ स्थिति में हैं।

(श्रीनिवास राघवन वी., विद्या जयशंकर और इंदिरा दिविपाला, मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

विषिंजम में शार्पटेल मोला मछली का अवतरण

विषिंजम में दिनांक 02 जुलाई, 2015 को परिचालित गिल जाल (रोल वला) द्वारा सनफिश, *मस्टूरस लान्सियोलेटस* (शार्पटेल मोला) को पकड़ा गया। इस मछली को ओशियन सनफिश नाम से भी जाना जाता है और भारतीय तट पर एम. लान्सियोलेट स का अवतरण असाधारण घटना है। पकड़ा गया नमूना 121 से. मी. की कुल लंबाई और 43.5 कि. ग्रा. भार वाला नर था। यह *मोला मोला* मछली के समान है, लेकिन इसके छद्म पुच्छ के आगे निकले हुए नख जैसे भाग से पहचान किया जा सकता है।

विषिंजम पोताश्रय में अवतरण की गयी शार्पटेल मोला मछली

भारतीय तारली में पोषण बेहत्तर वसा अम्ल प्रोफाइल

तारली (*सार्डिनेल्ला लोंगिसेप्स*) लोंग चेइन बहु असंतृप्त वसा अम्ल (पी यू एफ ए) का मुख्य स्रोत माना जाता है, इसमें कुल वसा अम्ल (टी एफ ए) का 14.84 और 8.65% क्रमशः ईकोसापेन्टोनिक आसिड (ई पी ए) और डोकोसाहेक्सोनिक आसिड (डी एच ए) थे। भारत की तारलियों (35.8% टी एफ ए) की अपेक्षा ओमान की तारलियों में कुल माध्य संतृप्त वसा अम्ल (~ 39% टी एफ ए) काफी अधिक था। इसी प्रकार ओमान और भारत की तारलियों के नमूनों के कुल एम यू एफ ए (मोनोअनसैच्युरेटड फैटी एसिड) में भी समान प्रवणता देखी गयी (क्रमशः 37.29 और 30.34% टी एफ ए)। दोनों नमूनों में एस एफ ए 16:0 देखा गया (ओमान तारली में 24% और भारतीय तारली में 21% टी एफ ए)। एम यू एफ ए में, 23% टी एफ ए (ओमान) और 13% टी एफ ए (भारत) के परास में 18:1n -9 प्रमुख वसा अम्ल के रूप में पहचाना गया। ओमान की तारलियों (~ 21% टी एफ ए) की अपेक्षा भारत की तारलियों में कुल माध्य संतृप्त वसा अम्ल (~ 30% टी एफ ए) अधिक था। ओमान की तारलियों की अपेक्षा भारत की तारलियों में पाए जाने वाले उच्च पी यू एफ ए/ एस एफ ए (0.83) और n -3/n-6 वसा अम्ल इसके बेहत्तर पोषण गुणता का कारण व्यक्त करता है।

ओमान की तारली

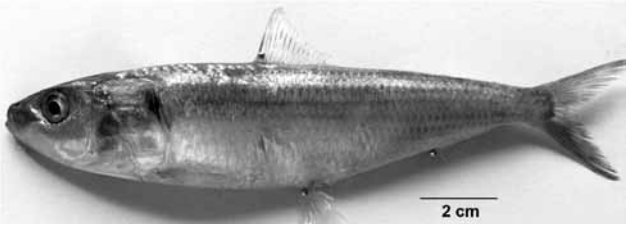

भारत की तारली

संसूचना के लिए नया मंच "कडल अनुभवंगल"

गुणभोक्ताओं से सीखने के उद्देश्य से संस्थान में "कडल अनुभवंगल" नामक एक नवोन्मेषी संसूचना मंच का प्रारंभ किया गया। समाज-आर्थिक मूल्यांकन एवं प्रौद्योगिकी स्थानांतरण प्रभाग (एस ई ई टी टी डी) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य गुणभोक्ताओं के अनुभव, मामले और सुझाव बांटते हुए मत्स्यन उद्योग के लिए अनुकूल भविष्य सुनिश्चित करते हुए अनुसंधान व्यवस्था और गुणभोक्ताओं के बीच का अलगाव दूर करने के लिए मंच प्रदान करना था। इस श्रेणी का प्रथम भाषण दिनांक 9 जुलाई, 2015 को श्री जोसी पल्लिपरम्बिल, जो मुनम्बम का यंत्रीकृत नाव मालिक है और उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी के लिए गुणभोक्ता के रूप में उनके पहल महत्वपूर्ण है, द्वारा पेश किया गया। उन्होंने मात्स्यिकी में परिरक्षण पर आधारित नीति, प्रोत्साहजनक तंत्र और इस क्षेत्र में संस्थागत सुधारों के लिए आह्वान दिया। इस अवसर पर श्री जोसी का अभिनन्दन किया गया। डॉ. आर. नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी प्रभाग ने कृतज्ञता अदा किया।

डॉ. मदन मोहन, भूतपूर्व ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प श्री जोसी का अभिनन्दन करते हुए

नई सुविधाएं

कारवार अनुसंधान केन्द्र में एक सौ टन की क्षमता वाली पुनःचक्रण जलकृषि व्यवस्था (आर ए एस) का कमीशन किया गया। प्रेशर सान्ड फिल्टर, ड्रम फिल्टर, प्रोटीन स्किम्मर और बयोलजिकल फिल्टर की सुविधा युक्त इस आर ए एस में प्रति घंटे में 100 टन के पुनःचक्रण की क्षमता है। देशज रूप से निर्मित 100 टन क्षमता युक्त यह आर ए एस देश में ही एकमात्र सुविधा है।

मात्स्यिकी पेशेवरों के लिए आण्विक जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में डी बी टी द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग द्वारा आयोजित मात्स्यिकी पेशेवरों के लिए आण्विक जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में डी बी टी द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का पहला बैच 30 सितंबर, 2015 को समाप्त हुआ। राष्ट्रीय संस्थानों के वैज्ञानिकों और पेशेवरों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में विशेषज्ञों के क्लास, व्यावहारिक प्रशिक्षण और खेत में मुआइना सम्मिलित थे। प्रशिक्षणार्थियों को अपनी कुशलता और समग्र सक्षमता बढाने के उद्देश्य से वैयक्तिक अनुसंधान परियोजना दी गयी। डॉ. पी. विजयगोपाल, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रशिक्षण का समन्वयन किया।

जलवायु परिवर्तन जागरूकता कार्यक्रम

बेल्मोन्ट फोरम की निधिबद्ध परियोजना "वैश्विक समझ और स्थानीय समाधानों के लिए सीखनाः समुद्र पर निर्भर तटीय समुदायों की सुभेद्यता कम करना" ने 7 अगस्त 2015 को एलमकुन्नपुषा गाँव में द्वितीय जागरूकता कार्यशाला आयोजित की। स्कूल के बच्चों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए एलमकुन्नपुषा सरकार उच्च शिक्षा विद्यालय और सान्टा क्रूज़ उच्च शिक्षा विद्यालय, पुतुवाइप्पु को चुना गया। इस अवसर पर पंचायत के अध्यक्ष एवं वार्ड के सदस्यों द्वारा बेल्मोन्ट टीम इंडिया की जलवायु शिक्षा प्रकाशन श्रेणी "ClimEd सीरीस-लेर्निंग एंड कोपीयिंग क्लाइमेट चेंज" का विमोचन किया गया।

स्कूल के बच्चों के लिए जलवायु विषय पर आयोजित पेइन्टिंग प्रतियोगिता

जागरूकता जगाने के लिए ClimEd सीरीस के विमोचन का दृश्य

प्रदर्शनियाँ

मांगलूर अनुसंधान द्वारा आयोजित प्रदर्शनियाँ

- मांगलूर में 18 और 19 सितंबर, 2015 को दो दिवसीय विज्ञान मेला 'पीलिकुला विज्ञान मेला', और मांगलूर मात्स्यिकी कॉलेज के कृषि विज्ञान केन्द्र, येक्कुरु, मांगलूरु में एन आर सी फोर स्पाइसेस, कृषि एवं बागवानी विभागों की सहकारिता से 28 सितंबर, 2015 को विज्ञान मेला आयोजित की गयी।

इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार (2014-15)

राजभाषा के उत्कृष्ट निष्पादन और सराहनीय उपलब्धियों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार 2014-15 भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने स्वीकार किया। विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितंबर, 2015 को आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती ई. के. उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने भी भाग लिया।

माननीय केन्द्र गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केन्द्र गृह राज्य मंत्री श्री किरण रिजिजू, गृह राज्य मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह और श्री गिरीश शंकर, सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

विभिन्न केन्द्रों में हिन्दी *चेतना मास* समारोह 2015

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाए जाने के उद्देश्य से 16 से 30 सितंबर, 2015 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाय गया। इस दौरान कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता से विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। पखवाड़े का समापन कार्यक्रम दिनांक 30 सितंबर, 2015 को श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सी एम एफ आर आइ की अध्यक्षता में आयोजित की गयी।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 5-9 अक्तूबर, 2015 के दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी सप्ताह मनाया गया और केन्द्र के कर्मचारियों ने बडे उत्साह के साथ भाग लिया।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में 14 से 30 सितंबर 2015 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में 14 से 27 सितंबर 2015 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। समापन कार्यक्रम दिनांक 28 सितंबर 2015 को आयोजित किया, जिसमें श्री पी. के. खुशवाहा, कमान अधिकारी, तटरक्षक स्टेशन, विषिंजम मुख्य अतिथि रहे और उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 30 सितंबर 2015 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इसी अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संतोष कुमार, अधिकारी, दूरसंचार विभाग ने पुरस्कार प्रदान किए। इस दौरान केन्द्र सरकार विभागों में हिन्दी के प्रयोग संबंधी नीतियों के बारे में हिन्दी कार्यशाला भी आयोजित की गयी।

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ 14 से 21 सितंबर 2015 के दौरान हिन्दी सप्ताह मनाया गया और 21 सितंबर 2015 को समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कर्मचारियों के लिए 25 सितंबर 2015 को बोलचाल की हिन्दी विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी।

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए

चेन्नई में हिन्दी सप्ताह समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का दृश्य

मंडपम में हिन्दी सप्ताह समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का दृश्य

डॉ. मोली वर्गीस, प्रधान वैज्ञानिक, समुद्री जैवविविधता प्रभाग, सी एम एफ आर आइ को अपने "भारत की मन्नार खाड़ी की नई मछलियाँ - एक परिचय" विषयक अनुसंधान लेख के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद का अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख पुरस्कार (हिन्दीतर भाषी क्षेत्र) नई दिल्ली में 7 अगस्त 2015 को आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया। पुरस्कार में ट्रोफी, प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार सम्मिलित थे।

डॉ. मोली वर्गीस पुरस्कार प्राप्त करती हुई

प्रधान मंत्री के राष्ट्रीय स्वच्छ भारत अभियान के संबंध में जारी किए गए परिषद के परिपत्र सं. 21-46/2014-समन्वय दिनांक 03 दिसंबर, 2014 में दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार 25 सितंबर से 11 अक्तूबर 2015 के दौरान जनता में अवगाह जगाने का विशेष अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान में सी एम एफ आर आइ मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक, निपुण सहायक कर्मचारियों और अनुसंधान

कोच्ची में मंगलवनम के परिसरों की सफाई

पोस्टरों द्वारा स्वच्छ भारत जागरूकता अभियान

अध्येताओं ने सहयोग दिया।

मुख्यालय में, कर्मचारियों ने बस शेल्टरों, मत्स्यन पोताश्रयों, स्कूलों, पार्क और अन्य सार्वजनिक स्थानों की सफाई कार्य में योगदान किया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र के कार्यालय परिसरों, कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला और सी एम एफ आर आइ चेन्नई के क्षेत्र केन्द्रों की सफाई सभी कर्मचारियों द्वारा की गयी। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में कर्मचारियों द्वारा 25 सितंबर, 2015 से 11 अक्तूबर, 2015 तक हर दिवस 1400 से 1600 तक दो घंटे अपने कार्यस्थानों की सफाई की गयी। कारवार अनुसंधान केन्द्र

कोच्ची में जागरूकता अभियान के भाग के रूप में आयोजित साइकिल राली

कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय की सफाई

में डॉ. के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक और कर्मचारी सदस्यों द्वारा कार्यालय परिसर, स्फुटनशाला समुच्चय और राष्ट्रीय मार्ग के दानों भागों की सफाई की गयी। एन एच 17 की सफाई में स्थानीय लोगों ने भी बडे उत्साह से सहयोग दिया। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में डॉ. एम. के. अनिल, प्रभारी वैज्ञानिक और सारे कर्मचारी सदस्यों ने हफ्ते में दो घंटे कार्यालय परिसर, जलजीवशाला, स्फुटनशाला और चारों ओर के स्थानों के सफाई कार्यों में भाग लिया और कार्यालय के सभी बयोडीग्रेडबिल अपशिष्टों को कंपोस्टिंग के लिए उपयुक्त करने में विशेष प्रयास उठाया। इस तरह बनाए गए कंपोस्ट कार्यालय के पिछवाडे में बागवानी और जैव तरकारी की खेती करने में उपयुक्त किए गए। इस अभियान पर आकर्षित होकर केन्द्र में आए आगंतुकों ने डायरी में विशेष सराहना और अच्छी टिप्पणियाँ लिखीं। कोच्ची में 11 अक्तूबर, 2015 को साइकिल राली द्वारा जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

चेन्नई में समुद्री पुलिनों की सफाई

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में सफाई अभियान का दृश्य

वेरावल में सफाई कार्यविधियों का दृश्य

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में सफाई अभियान

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में सफाई कार्य का दृश्य

मनोरंजन क्लब की कार्यविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस समारोह

मुख्यालय में ध्वजारोहण का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य

ओणम समारोह

यू ए ई के प्रतिनिधियों द्वारा मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में मुआइना

यु नाइटड अरब एमिरेट्स के सशस्त्र सेना सहकारी संघ (ए एफ सी एस, यू ए ई), जिन्होंने उच्च मूल्य वाली पख मछलियों के पालन के लिए संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी की ओर अभिरुचि प्रकट की। इस सिलसिले में डॉ. पी. दास, भूतपूर्व डी डी जी, विस्तार (भा कृ अनु प) और डॉ. प्रधान, निदेशक, इन्टरनेशनल ट्रेसबिलिटी सिस्ट म लिमिटड ने यू ए ई में समुद्रीबास और कोबिया मछलियों के पालन की साध्यताओं पर अध्ययन करने के लिए 3 से 7 जुलाई, 2015 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया और आपसी विनियम बैठक आयोजित की गयी। डॉ. के. के. फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केन्द्र एवं समुद्री संवर्धन पर ए आइ एप पी का राष्ट्रीय समन्वयक, डॉ. बोबी इग्नेशियस, डॉ. ए. के. अब्दुल नासर (सी एम एफ आर आइ), डॉ. वर्गीस जोण, राष्ट्रीय मात्स्यिकी संग्रहणोत्तर प्रौद्योगिकी एवं प्रशिक्षण संस्थान (एन आइ एफ पी एच ए टी टी), डॉ. सैनुदीन ए. ए., केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (सी आइ एफ टी) और मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र के कर्मचारियों ने विचार-विमर्श में भाग लिया। पिंजरा फार्म और स्फुटनशाला में फील्ड विसिट किया गया और पूर्व साध्यता रिपोर्ट तैयार की गयी।

पिंजरा फार्म में यू ए ई प्रतिनिधियों का मुआइना

- **डॉ. रोबर्ट आल्फ्रेड सेल्वकुमार**, भूतपूर्व ए डी जी (स. मा.), भा कृ अनु प एवं सदस्य, आर ए सी, सी एम एफ आर आइ ने 30 जुलाई से 2 अगस्त 2015 तक मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया।
- डॉ. जी. सैदा रावु, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने 7 और 8 सितंबर 2015 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया।
- डॉ. टी. एस. डांगे, निदेशक, गल्फ ऑफ मन्नार बायोस्फियर रिसर्व ट्रस्ट (जी ओ एम बी आर टी) ने 24 जुलाई 2015 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया।

डॉ. जी. सैदा रावु, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन के अंदर एक उद्यमी द्वारा परिचालित अलंकारी मछली स्फुटनशाला का निरीक्षण करने का दृश्य

डॉ. टी. एस. डांगे, निदेशक, जी ओ एम बी आर टी समुद्री प्रवाल भित्ति जलजीवशाला का निरीक्षण करते हुए

पुरस्कार

- मात्स्यिकी विज्ञान में वर्ष 2014 के उत्कृष्ट पीएच. डी थिसीस के लिए भा कृ अनु प का जवहरलाल नेहरु युवा वैज्ञानिक पुरस्कार डॉ. पी. ए. विकास, विषय विशेषज्ञ, एरणाकुलम कृषि विज्ञान केन्द्र को प्राप्त हुआ। यइ अंगीकार भारत के जलकृषि उद्योग द्वारा करोड़ों रुपए खर्च करके आर्टीमिया आयात करने के बदल उपाय के रूप में गुणतायुक्त एवं चयनित प्रजनन द्वारा आर्टीमिया के उत्कृष्ट भारतीय प्रभेद के विकास के लिए है। डॉ. पी. ए. विकास ने डॉ. पी. सी. तोमस, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), सी एम एफ आर आइ के मार्गदर्शन में अपना अनुसंधान कार्य पूरा किया।
- श्रीमती अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन को डॉ. एस. के. चक्रबर्ती, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई के मार्गदर्शन में किए गए अपने "महाराष्ट्र तट के तटीय ट्यूनाओं के मात्स्यिकी बयोनोमिक्स एवं स्टॉक निर्धारण" विषयक अनुसंधान कार्य के लिए भा कृ अनु प-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (समकक्ष विश्वविद्यालय), मुम्बई द्वारा मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी (पीएच. डी) प्रदान की गयी।
- डॉ. जिद्दा महेश्वरुडु, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग को उत्कृष्ट वैज्ञानिक योगदानों के लिए आइ ए एस आर, फोटोन फाउन्डेशन द्वारा प्राणिविज्ञान एवं अध्येता, आइ ए एस आर (इन्टरनेशनल एजेन्सी फोर स्टान्डेर्ड्स एंड रेटिंग) चार्ल्स डार्विन अनुसंधान पुरस्कार - 2015 से सम्मानित किया गया।

तमिल नाडु के समुद्री जलवायु और मात्स्यिकी परिवेश
'Climard-1'

देशज तकनीकी ज्ञान (मलयालम)

ClimFish एन आइ सी आर ए
समाचार पत्र, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

उद्यमिता विकास कार्यक्रम - 2015

सार्वजनिक तालाबों में जलीय खरपतवार के जीवविज्ञानीय प्रबंधन का निदर्शन

तालाब में ग्रास कार्प मछली के संभण का दृश्य

कृषि विज्ञान केन्द्र ने सार्वजनिक तालाबों में ग्रास कार्प मछली (*टीनोफारिंगोडोन आइडेल्ला*), जो अपने शरीर भार के 2 से 3 गुना जलीय पौधे खाती है और लगभग 50 किलोग्राम के आकार तक बढ़ती है, के पालन द्वारा जलीय खरपतवार के प्रबंधन का निदर्शन कार्य का प्रारंभ किया। यह मछली तालाबों में प्रजनन न करने की वजह से इसका प्रबंधन आसान है। जलीय खरपतवार भरे गए एक एकड़ के आकार वाले तालाब में केवल 20 ग्रास कार्प मछलियों की जरूरत है और मछली संतति बाज़ार में उपलब्ध हैं। कोच्ची के तृप्पूनित्तुरा के कोडमकुलम स्थान के तालाब में दिनांक 21 जुलाई 2015 को तृप्पूनित्तुरा नगरपालिका अध्यक्ष श्री आर. वेणुगोपाल और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं से संकेत मिलता है कि तालाबों में जलीय पौधों का प्राकृतिक रूप से नियंत्रण करने में यह कार्यक्रम अत्यंत सफल निकला है।

समुद्री मछली अपशिष्टों से जैव उर्वरक - 'फिशलाइज़र' का लाँचिंग

सी एम एफ आर आइ में 'फिशलाइज़र' के लाँचिंग का दृश्य

समुद्री मछली अपशिष्टों से बनाए गए नए जैव उर्वरक 'फिशलाइज़र' का लाँचिंग सी एम एफ आर आइ में 14 अगस्त 2015 को डॉ. ए. के. सिंह, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), भा कृ अनु प द्वारा किया गया। कयर (रस्सी) उद्योग का अपशिष्ट याने कि कयर मज्जा माध्यम में समुद्री मछली अपशिष्ट का सूक्ष्मजैविक क्षरण करके बनाए गए इस उत्पाद में पौधों की बढ़ती और फूल एवं फल होने के लिए आवश्यक घटक मौजूद हैं। कोच्ची के सी एम एफ आर आइ- ए टी आइ सी- कृ वि के विपणन स्टॉल द्वारा इसका विपणन किया जाता है।

कृ वि केन्द्र के सहभागी किसान के खेत में अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षणार्थियों का मुआइना

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (एम ए एन ए जी ई), हैदराबाद द्वारा आयोजित "कृषि विस्तार प्रबंधन में नए आयाम" विषयक यू-एस-इंडिया-आफ्रिका त्रिकोनीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग के रूप में केनिया, मालावी और लिबेरिया के चार पदाधिकारियों ने 11 अगस्त 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र के सहभागी किसान के पोक्काली खेत का मुआइना किया।

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन**, निदेशक ने 25 और 26 जुलाई 2015 को पटना में आयोजित भा कृ अनु प स्थापना दिवस समारोह तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

  कृषि भवन, नई दिल्ली में 6 अगस्त 2015 को महानिदेशक की अध्यक्षता में आयोजित समुद्री मात्स्यिकी की राष्ट्रीय नीति का मसौदा के सुझाव पर गठित समिति की प्रथम बैठक में भाग लिया।

  नोर्वे में भारतीय प्रतिनिधियों के भाग के रूप में 16 से 22 अगस्त 2015 के दौरान नोर्वे के ट्रोन्धीम में आयोजित अक्वा एन ओ आर और संयुक्त कार्य ग्रुप की बैठक में भाग लिया।

  विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितंबर 2015 को आयोजित कार्यक्रम में संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट निष्पादन एवं सराहनीय उपलब्धियों के लिए भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार स्वीकार किया।

  भारत के लिए समुद्री मात्स्यिकी नीति पर प्रश्नावली का अंतिम रूप देने के लिए 17 और 18 सितंबर 2015 को आयोजित महानिदेशक, भा कृ अनु प और संयुक्त सचिव , डी ए एच डी एवं एफ की बैठक में भाग लिया

- **डॉ. के. एस. मोहम्मद,** अध्यक्ष, एम एफ डी ने वी एव एस सी मात्स्यिकी अध्यापकों को सशक्त बनाने के लिए ले कन्वेन्शन सेन्टर, कोवलम, ट्रिवान्ड्रम में 3 जुलाई 2015 को आयोजित एस सी ई आर टी प्रशिक्षण में उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी, परिरक्षण, समुद्री विधान, एफ ए डी एवं पी एफ इज़ेड विषय पर विशेषज्ञ सत्र चलाया।

  कोच्ची में 4 जुलाई 2015 को आयोजित सी एम एफ आर आइ-आनाय मात्स्यिकी संघ के आपसी बैठक में भाग लिया।

  पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली में 21-22 जुलाई 2015 को इन्डो-जर्मन तकनीकी सहकारिता परियोजना "जैवविविधता एवं पारिस्थितिकी सेवाओं के टिकाऊ प्रबंधन के लिए प्रोत्साहन" की समीक्षा बैठक में भाग लिया।

  नई दिल्ली में 6 अगस्त 2015 को आयोजित समुद्री मात्स्यिकी की राष्ट्रीय नीति का मसौदा के सुझाव पर गठित समिति की प्रथम बैठक में भाग लिया।

  सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में 11-13 अगस्त 2015 के दौरान भारत के पूर्व तट के लिए इकोपाथ मोडलिंग विषय पर आयोजित सी एम एफ आर आइ-बी ओ बी एल एम ई कार्यशाला में भाग लिया।

  आइ एन सी ओ आइ एस, हैदराबाद में 16-22 सितंबर 2015 के दौरान "स्टॉक निर्धारण तकनीक एवं आवास व्यवस्था मोडलिंग" विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और "इकोपाथ एवं इकोसिम उपयुक्त करके आवास व्यवस्था मोडलिंग" विषय पर भाषण दिया।

- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने 18 अगस्त 2015 को भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई में नगर राजभाषा समन्वयन समिति 17वीं छमाही बैठक में भाग लिया।

  महाराष्ट्र के मात्स्यिकी विभाग द्वारा 13 जुलाई, 2015 को आयोजित मुम्बई जिला सलाहकार समिति की बैठक में सी एम एफ आर आइ के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

- **डॉ. एम. के. अनिल,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने 9 सितंबर 2015 को जिलाधीश कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में विषिंजम अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह परियोजना से प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास और पुनःस्थापन पर आयोजित आजीविका संघात मूल्यांकन समिति की अंतिम बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. शुभदीप घोष,** प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र ने 05-08 अगस्त 2015 को सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर में आयोजित "हिल्सा मछली (टेनूलोसा इलीशा) के स्टॉक निरूपण, प्रग्रहण अवस्था में प्रजनन, संतति उत्पादन और पालन" विषयक एन बी एस एफ ए आर ए परियोजना की सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. आर. नारायणकुमार,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने नई दिल्ली में 21-22 जुलाई 2015 को आयोजित टी ई ई बी इंडिया प्रारंभिक समीक्षा कार्यशाला में भाग लिया और परियोजना की अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत किया। नई दिल्ली में 4-5 अगस्त 2015 को भा कृ अनु प के संस्थानों के कृषि पोर्टल के नोडल अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. शेखर मेघराजन,** वैज्ञानिक ने आंध्रा प्रदेश के विजयवाडा में दिनांक 25 जून, 2015 को आंध्रा प्रदेश राज्य के मात्स्यिकी विभाग द्वारा जलकृषि क्षेत्र के गुणभोक्ताओं के लिए आयोजित एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया और "तटीय जलकृषि के लिए बदल प्रजातियों की प्रत्याशा" विषय पर भाषण दिया।

- **डॉ. शुभदीप घोष,** वरिष्ठ वैज्ञानिक और श्री एम. सतीष कुमार, तकनीकी सहायक ने आंध्रा प्रदेश राज्य के मात्स्यिकी विभाग द्वारा 06 जुलाई 2015 को विशाखपट्टणम में "समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र के गुणभोक्ताओं के साथ गहरा सागर मत्स्यन" विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. प्रलय रंजन बेहरा,** वैज्ञानिक ने एस आइ एफ टी, काक्किनाडा में 08 सितंबर, 2015 को "समुद्री पट्टा नीति की साध्यताएं" और "आंध्रा प्रदेश के लिए अलग मात्स्यिकी विकास बोर्ड का गठन" विषयों पर आयोजित एक दिवसीय बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. रितेश रंजन** ने सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में 19 सितंबर 2015 को आयोजित भा कृ अनु प क्षेत्रीय समिति-II बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. ए. पी. दिनेश बाबु** और **डॉ. गीता शशिकुमार**, प्रधान वैज्ञानिकों ने तटीय विकास प्राधिकरण और कर्नाटक सरकार द्वारा 29 सितंबर 2015 को सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र, कारवार में कर्नाटक की समुद्री मात्स्यिकी-वर्तमान स्तर और भविष्य के विकल्प विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया।

- **डॉ. ए. के. अब्दुल नासर,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी आइ बी ए, चेन्नई में 16-17 जुलाई 2015 को आयोजित भारत सरकार के भारतीय मानक ब्यूरो की मछली, मात्स्यिकी एवं जलकृषि अनुभागीय समिति, एफ ए डी 12 में भाग लिया।

- **डॉ. ए. के. अब्दुल नासर** और **डॉ. आर. जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने कृषि विकास की अंतर्राष्ट्रीय निधि (आइ एफ ए डी) की सहायता से तमिल नाडु सरकार के ग्रामीण विकास विभाग और पंचायती राज की परियोजना सूनामी पश्चात टिकाऊ आजीविका परियोजना (पी टी एस एल पी) द्वारा 'मात्स्यिकी संपदाओं के टिकाऊ परिरक्षण के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण मत्स्यन' विषय पर 28-29 सितंबर 2015 को आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. आर. जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने राज्य मात्स्यिकी विभाग, रामनाथपुरम में 4 जुलाई 2015 को आयोजित पाक उपसागर की संपदाओं के लिए स्टीरिंग समिति बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. एम. शक्तिवेल,** वैज्ञानिक ने मुम्बई में 14 जुलाई 2015 को सीटेशियनों पर जी ओ आइ-यू एन डी पी-जी ई एफ की निधिबद्ध सिन्धुदुर्ग परियोजना की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. बी. जोनसन,** वैज्ञानिक ने मंडपम में 24 जुलाई 2015 को जी ओ एम बी आर टी निधिबद्ध परियोजना की समीक्षा बैठक 'चुनी गयी अलंकारी मछलियों के संतति उत्पादन पर क्षमता वर्धन' में भाग लिया।

कार्यशाला/ प्रशिक्षण/ सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	भागीदार
वैज्ञानिकों के लिए सामान्य प्रबंधन कार्यक्रम	6-7 जुलाई 2015, ए एस सी आइ, हैदराबाद	डॉ. पी. लक्ष्मीलता, प्रधान वैज्ञानिक
'प्रबंधन एवं समाज विज्ञान में अनुसंधान केलिए आंकडा विश्लेषण' विषय पर कार्यशाला	9-11 जुलाई 2015, दूर शिक्षा केन्द्र, अण्णा विश्वविद्यालय, चेन्नई	डॉ. आर. गीता, वैज्ञानिक
"पर्यावरण संघात निर्धारण" पर राइट शोप	7-9 जुलाई 2015, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई	डॉ. वी. वी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक श्री आर. रीतश कुमार, वैज्ञानिक
"खेतों का उत्पादन एवं आय बढ़ाने की ओर जलकृषि विविधीकरण" विषय पर कार्यशाला	8-28 जुलाई 2015, सी आइ एफ ए, भुवनेश्वर	डॉ. विकास पी. ए., तकनीकी अधिकारी, के वी के विषय विशेषज्ञ (मात्स्यिकी)
'R' तरीका उपयुक्त करके मात्रात्मक अनुसंधान, तकनीक एवं विश्लेषण	17-19 अगस्त 2015, क्राइस्ट विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम	श्री विनय कुमार वास, वैज्ञानिक
तकनीकी अधिकारियों के लिए क्षमता वर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम	19-28 अगस्त 2015, एन ए ए आर एम, हैदराबाद	डॉ. एम. पी. पोल्टन, तकनीकी अधिकारी डॉ. बिश्वजीत दास, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
"सांख्यिकीय औजार उपयुक्त करके प्राकृतिक संपदा प्रबंधन का जियोस्टाटिस्टिकल विश्लेषण" विषय पर प्रशिक्षण	2-11 सितंबर 2015, एन ए ए आर एम, हैदराबाद	डॉ. ए. पी. दिनेशबाबु, प्रधान वैज्ञानिक
"मात्स्यिकी स्टॉक निर्धारण और आवास व्यवस्था मोडलिंग" विषय पर प्रशिक्षण	16-22 सितंबर 2015, आइ एन सी ओ आइ एस, हैदराबाद	डॉ. सुजिता तोमस, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राजेश के. एम., वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. बी. पुरुषोत्तमा सुश्री जास्मिन एफ., सुश्री कविता(वैज्ञानिक गण) श्री एम. सतीश कुमार, तकनीकी सहायक श्री शरत किनी, एस आर एफ
पेटेंट फाइलिंग, प्रोससिंग एवं ड्राफ्टिंग आर जी आइ आइ पी एम, नागपुर	21-23 सितंबर 2015, आर जी आइ आइ पी एम, नागपुर	श्री चिरयत लाविना विन्सेन्ट, अनुसंधान सहायक
मात्स्यिकी पेशेवरों के लिए आण्विक जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में राष्ट्रीय प्रशिक्षण	01जुलाई-30 सितंबर 2015, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	श्री एस. चन्द्रशेखर, श्री डी. लिंग प्रभु और सुश्री एन. एस. जीना (वैज्ञानिक गण)

गृहांदर प्रशिक्षण / कार्यशालाएं	तारीख एवं स्थान	भागीदार
बड़े वेलापवर्तियों और तारलियों पर वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग की कार्यशाला	01-05 सितंबर 2015, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. एम. शिवदास, डॉ. ई. एम. अब्दुसमद, डॉ. मार्गरट मुत्तुरतिनम (प्रधान वैज्ञानिक गण), डॉ. यु. गंगा, डॉ. शुभदीप घोष, डॉ. के. एम. राजेश (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण)
चुने गए आवास तंत्रों के जैवविविधता मूल्यांकन पर कार्यशाला	01-05 सितंबर 2015, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. के. के. जाषी (प्रधान वैज्ञानिक), डॉ. आर. शरवणन, श्री प्रलय रंजन बेहरा, सुश्री दिव्या विश्वंभरन (वैज्ञानिक गण)
महाराष्ट्र के रत्नगिरी जिला में वेलास से दाभोल तक के खारा पानी में पंक केकड़ा पालन की शक्यता पर रणनीतिपरक निर्धारण पर परियोजना प्रारंभ कार्यशाला	07 जुलाई 2015, सी एम एफ आर आइ कालिकट अनुसंधान केन्द्र	डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक

आयोजित प्रशिक्षण / संगोष्ठी	तारीख एवं स्थान	आयोजन
जी आइ एस पर आधारित संपदा मानचित्रण	5-6 अगस्त 2015, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	डॉ. ए. पी. दिनेशबाबु, प्रधान वैज्ञानिक
टिकाऊ मात्स्यिकी की ओर	12-14 अगस्त 2015, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र	डॉ. एम. विजयकुमारन, प्रधान वैज्ञानिक
कोबिया मछली के पिंजरा पालन पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम	23 सितंबर 2015, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
कर्नाटक की समुद्री मात्स्यिकीः वर्तमान स्तर और भविष्य के विकल्प पर संगोष्ठी	29 सितंबर 2015,	सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र और कर्नाटक तटीय विकास प्राधिकरण

नियुक्तियां

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
1. श्रीमती प्रिया के. एम.	तकनीकी सहायक (हिन्दी अनुवादक)	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.06.2015
2. श्रीमती तनुजाक्षी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	10.06.2015
3. श्री पी. वेंकटेश	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	26.06.2015
4. श्रीमती उण्णिरश्मी सी. यु.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.09.2015
5. श्री मिथुन कुमार पी. एच.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.09.2015
6. श्री अखिल बाबु वी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.09.2015
7. श्री विष्णु बाबु टी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.09.2015
8. कुमारी रिन्कु जोसफ	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
9. कुमारी दीपा आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
10. श्रीमती अन्जु ई. टी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
11. श्रीमती विजयलक्ष्मी वी. वी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
12. श्री कौशिक टी. आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
13. श्री जितीश टी. डी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2015
14. श्री अजु के. राजु	तकनीकी सहायक	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
15. श्री प्रशांत पी. के.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
16. श्री सिबिन पी. बाबु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
17. श्री रतीश एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
18. कुमारी सेतुलक्ष्मी एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
19. श्री जोबी पी. जे.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015(अपराह्न)
20. श्री विष्णु बी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.09.2015
21. कुमारी अनश्वरा के. बी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.09.2015
22. श्री पकीरी मुत्तु एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.09.2015
23. श्रीमती श्रुती एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.09.2015
24. श्रीमती जेस्ली डिसिल्वा	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.09.2015
25. श्री अखिलदेव एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
26. श्रीमती श्रीलक्ष्मी एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
27. कुमारी बिनिता बाबु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
28. श्रीमती रम्या ई. ए.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
29. कुमारी सौम्या के.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
30. श्री उल्लास शंकर	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	14.09.2015
31. कुमारी जिनीमोल के. पी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.09.2015
32. श्रीमती हिमा पी. एच.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.09.2015
33. श्रीमती दिव्या के. ए.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.09.2015
34. श्रीमती अश्वती ए. एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.09.2015
35. श्री एल्दोस बेन्नी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.09.2015
36. श्री तोबियास पी. आन्टणी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.09.2015
37. श्री अनिरुद्ध के.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	16.09.2015
38. श्री वैशाखन पी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
39. श्री सादिक एम. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
40. श्री सुजित आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
41. कुमारी मरज़ाना पी. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
42. कुमारी रेष्मा के. एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
43. श्री अभिलाष वेलायुधन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
44. श्रीमती कीर्ती कृष्णा	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015
45. कुमारी आतिरा टी. जी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	17.09.2015 (अपराह्न)
46. श्रीमती प्रीती उदयभानु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	18.09.2015
47. श्री विपिनकुमार के. के.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	19.09.2015
48. श्री जेरिन वी. जोस	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.09.2015
49. श्री अगस्टिन सिप्सन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.09.2015
50. श्री अखिल ए. आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.09.2015

नियुक्तियां

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
51. श्री पल्ली कालिदासु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.09.2015
52. श्री सेबान जोण	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	21.09.2015
53. श्री एम. शरवणकुमार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	23.09.2015
54. श्री बिसुन भास्कर	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	23.09.2015
55. श्रीमती शजाला बानु पी. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	25.09.2015
56. कुमारी आरती आर. पिल्लै	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.10.2015
57. श्री टी. ज्योती मणिकंठन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
58. कुमारी के. षण्मुखप्रिया	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
59. श्री सुरेश आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
60. श्री ए. मोहम्मद कलीम	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
61. श्रीमती एम. अफ्रिन रानी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
62. श्री जे. रामचन्द्रन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	08.09.2015
63. श्री एम. महालिंगम	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	10.09.2015
64. श्रीमती के. माधवी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	10.09.2015
65. श्री रविकुमार टी. टी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	11.09.2015
66. श्री बी. शरवणकुमार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	16.09.2015
67. श्री आर. राजकुमार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	18.09.2015
68. श्री अनीष यु.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	18.09.2015
69. श्री एस. जोसफ जगन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	21.09.2015
70. श्री वी. आनन्द	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	22.09.2015
71. श्री वी. जयप्रदीप	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	23.09.2015
72. श्री अलक्स टी. हिसकिएल	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	23.09.2015
73. श्री दामोदर रावु पदमु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	07.09.2015
74. श्री सीराम नूकराजु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	07.09.2015
75. श्री सीरा हरीश	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	07.09.2015 (अपराह्न)
76. श्री पोटाला भास्कर रावु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
77. श्री वेंकटेश्वरुलू वुय्याला	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	26.09.2015
78. श्री भिन्ट मितेश हीरालाल	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	09.09.2015 (अपराह्न)
79. श्री चोरवाड़ी कमलेश कालिदास	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	10.09.2015 (अपराह्न)
80. श्री थाकर मिलन रजनीकांत	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	18.09.2015
81. श्री सोनारा योगेश ज़िनाभाइ	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	24.09.2015
82. श्री मुशाग्रा रजित हसम	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	15.09.2015
83. कुमारी पी. प्रसन्नकुमारी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	09.09.2015
84. श्री मिथुन मुत्तयन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
85. श्री टी. बलरामन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
86. श्री एस. दामोदरन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
87. श्री ए. विनोद	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	16.09.2015
88. श्री के. प्रभाकरन	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
89. श्री राजा शेखर आर.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
90. श्री आशिश सी. एस. चतुर्वेदी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	10.09.2015
91. श्री विक्की कुमार प्रजापती	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
92. श्रीमती विजीशा एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
93. श्री सुरेश	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	16.09.2015 (अपराह्न)
94. श्री मयंक प्रताप सिंह	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	19.09.2015 (अपराह्न)
95. श्री वैभव मिलन तावडे	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
96. श्री वैभव जयंत घरात	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
97. श्री आशाराम चौधरी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	15.09.2015
98. श्री दिगंबर सुरेश कुम्बर	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	30.09.2015
99. कुमारी पूजा महाबलेश्वर गजिनकर	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	10.09.2015
100. श्री सूरज सुरेन्द्र कल्गुटकर	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	10.09.2015

नियुक्तियां

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
101. श्री विनीत टी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
102. कुमारी वीणा उल्हास कांब्ले	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	16.09.2015
103. श्री श्रीनाथ बी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	09.09.2015
104. श्री नागराज सोमय्या गोन्ड	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	09.09.2015
105. श्रीमती सत्यवती	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
106. कुमारी पुष्पा के.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	16.09.2015
107. श्री अब्दुल हकीम एम. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	21.09.2015
108. श्री धर्मराजु एल. बी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
109. श्री सुजित कुमार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	23.09.2015
110. श्री नवीन राजु के. जी. नाइक	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	24.09.2015
111. कुमारी शरण्या एम. पी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
112. कुमारी कृष्णप्रिया पी. एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	14.09.2015
113. श्री जितेश पी. टी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	16.09.2015
114. श्रीमती शालिनी ओ.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	17.09.2015
115. श्री अनूप के. जी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	17.09.2015
116. श्री ग्रीवर योयक वी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	21.09.2015
117. कुमारी निशिता पी.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ का के वी के	09.09.2015

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	प्रभावी तारीख	केन्द्र
1. डॉ. शुभदीप घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आर जी पी- रु.8,000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक, आर जी पी- रु.9,000/-	03.03.2014	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र
2. डॉ. जयश्री लोका, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आर जी पी- रु.8,000/-	वरिष्ठ वैज्ञानिक, आर जी पी- रु.9,000/-	16.03.2014	कारवार अनुसंधान केन्द्र
3. डॉ. (श्रीमती) संध्या सुकुमारन,वैज्ञानिक	वरिष्ठ वैज्ञानिक	01.01.2014	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
4. डॉ. वी. वेंकटेशन, वैज्ञानिक,	वरिष्ठ वैज्ञानिक,	01.01.2014	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
5. डॉ. जी. बी. पुरुषोत्तमा, वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	15.12.2013	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र
6. डॉ. जोनसन बी. , वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	04.11.2013	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
7. डॉ. (श्रीमती) बिजी सेवियर, वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	11.02.2013	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र
8. डॉ. दिवु डी. , वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	04.11.2013	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र
9. डॉ. प्रदीप एम. ए., वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	04.11.2013	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
10. डॉ. (श्रीमती) आर. गीता , वैज्ञानिक आर जी पी- रु.6,000/-	वैज्ञानिक आर जी पी- रु.7,000/-	23.06.2013	मद्रास अनुसंधान केन्द्र
11. श्री वी. एड्विन जोसफ, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)	मुख्य तकनीकी अधिकारी	01.01.2014	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
12. श्री जे. श्रीनिवासन, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)	मुख्य तकनीकी अधिकारी	01.01.2014	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
13. श्री एस. हाजा नजमुदीन, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)	मुख्य तकनीकी अधिकारी	01.01.2011	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची
14. श्री सी. के. सजीव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	01.07.2011	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र
15. श्री टी. राजेश बाबु, एस एस एस	तकनीशियन	01.07.2015	कालिकट अनुसंधान केन्द्र
16. श्री एम. शाहुल हमीद, नि श्रे लि	उ श्रे लि	05.08.2015	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
17. श्री एम. जयसिंह, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	05.08.2015	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
18. श्री पी. के. हरिकुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	01.01.2010	पुरी क्षेत्र केन्द्र

प्रत्यावर्तन

नाम व पदनाम	प्रत्यावर्तित पद	प्रभावी तारीख	केन्द्र
1. श्री वी. सी. सुभाष, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	सहायक	29.09.2015	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री किशोर रघुनाथ मइनकर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	अलिबाग क्षेत्र केन्द्र	15.06.2015
2. श्रीमती वीणा शेट्टिगर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	मांगलूर अनुसंधान केन्द	30.05.2015
3. श्री बशीर अहम्मद आलम शिलोदर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	15.06.2015
4. श्री नरसिंहुलु साधु, तकनीकी सहायक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	18.05.2015
5. कुमारी लावण्या एस., तकनीकी सहायक	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.07.2015
6. श्री प्रभाकर शंकर साल्वी, वरिष्ठ तकनीशियन	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	24.06.2015
7. श्री षिजु पी., तकनीशियन	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	15.06.2015
8. श्री मिथुनराज एन. के., तकनीशियन	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	24.06.2015
9. श्री पी. के. हरिकुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	सी एम एफ आर आइ कृ वि केन्द्र	पुरी क्षेत्र केन्द्र	11.09.2015
10. डॉ. प्रवीण नारायण दुबे, तकनीकी सहायक	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	कारवार अनुसंधान केन्द्र	24.06.2015
11. श्रीमती रम्या अभिजित, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
12. कुमारी रम्या एल., वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
13. श्री सुखदाने कपिल सुखदेव, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
14. श्री राजेश कुमार प्रधान, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
15. कुमारी ई. एम. चन्दप्रज्ञदर्शिनी, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	11.09.2015
16. श्री राजकुमार एम., वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	14.09.2015
17. श्री नाखवा अजय दयाराम, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	मुम्बई अनुसंधान केन्द्र	11.09.2015
18. कुमारी सलोनी शिवम, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	कारवार अनुसंधान केन्द्र	11.09.2015
19. श्री एस. तिरुमलासेल्वन, वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	11.09.2015
20. श्रीमती राधिका कृष्णन जी., सहायक	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	29.09.2015
21. श्री आर. बालकृष्णन, निम्न श्रेणी लिपिक	विषिंजम अनुसंधान केन्द्र	सी एम एफ आर आइ, काच्ची	01.10.2015

अंतर संस्थानीय स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री गौरी शंकर रावु, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (कंप्यूटर)	आइ आइ एच आर, बंगलूरु	सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	17.07.2015
2. श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	सी एस डब्लियु आर आइ, अविकानगर	31.08.2015 (अपराह्न)
3. श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी	आइ वी आर आइ, इज़तनगर	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	05.09.2015

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
1. श्री पी. रामु	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	01.08.2015 (अपराह्न)
2. श्री शंगाभाय लखा भाय परेदी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	01.10.2015 (अपराह्न)

बैठकें

संस्थान की 13वां संयुक्त कर्मचारी परिषद की प्रथम बैठक 21 सितंबर, 2015 को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में आयोजित की गयी।

कार्यभार ग्रहण

डॉ. पी. लक्ष्मीलता, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 07 सितंबर, 2015 को सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, मद्रास के प्रभारी वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।
श्री सी. मुरलीधरन ने दिनांक 05 सितंबर, 2015 को सी एम एफ आर आइ के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्तियाँ

श्री ए. षण्मुखवेल
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
31.07.2015
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र

श्रीमती लता एल. खम्बाडकर
तकनीकी अधिकारी
30.09.2015
सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री आर. शेखर
तकनीकी अधिकारी (डेकहैन्ड)
30.09.2015
टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र

श्री जी. संपत कुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
30.09.2015
मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

श्री एम. समुतिरम
सहायक
30.09.2015
टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र

श्रद्धांजलि

डॉ. एस. इज़ेड. क्वासिम

(31 दिसंबर, 1926 - 20 अक्तूबर, 2015)

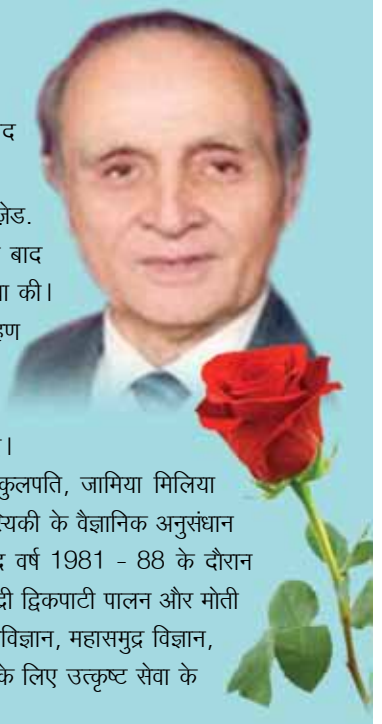

अत्यंत खेद से हमारे भूतपूर्व निदेशक डॉ. सेयद ज़हूर क्वासिम के दिनांक 20 अक्तूबर, 2015 को हुए दुखद निधन पर सूचित किया जाता है।

अलिगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से (ए एम यु) वर्ष 1949 में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद एस. इज़ेड. क्वासिम ने उच्च शिक्षा के लिए व्हेल्स विश्वविद्यालय, यू के गए। वर्ष 1949 में भारत में वापस आने के बाद उन्होंने ए एम यु के प्राणिविज्ञान विभाग में कार्यग्रहण किया, जहाँ उन्होंने प्राध्यापक और रीडर के पदों में सेवा की। वर्ष 1962 में उन्होंने केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (सी आइ एफ ई) में प्रोफसर के पद पर कार्यग्रहण किया। वर्ष 1964 में इन्टरनाशनल इंडियन ओशियन एक्स्पडीशन (आइ आइ ओ ई), कोच्ची के सहायक निदेशक थे। डॉ. क्वासिम ने 07.12.1970 से 04.01.1974 तक भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ के निदेशक के पद पर सेवा की और बाद में राष्ट्रीय महासमुद्र विज्ञान संस्थान के निदेशक बनके गए। उन्होंने कई प्रमुख स्थानों में राष्ट्र की सेवा की जैसे सचिव, महासागर विकास विभाग, भारत सरकार, कुलपति, जामिया मिलिया केन्द्रीय विश्वविद्यालय और बाद में योजना आयोग (विज्ञान) के सदस्य। महासागर विज्ञान और समुद्री मात्स्यिकी के वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान किए। भारत के प्रथम अन्टार्टिक खोज में वे लीडर थे। इसके बाद वर्ष 1981 - 88 के दौरान उनके मार्गदर्शन में विभिन्न अन्टार्टिक खोज यात्रा आयोजित किए गए। सी एम एफ आर आइ में उन्होंने समुद्री द्विकपाटी पालन और मोती संवर्धन में नवोन्मेषी अनुसंधान को प्रोत्साहित किए, जिनका प्रभाव मात्स्यिकी सेक्टर में पड़ा। मात्स्यिकी जीवविज्ञान, महासमुद्र विज्ञान, प्राथमिक उत्पादकता और ध्रुवीय विज्ञान से संबंधित उनके अनुसंधान लेख अत्यंत ध्यान देने योग्य हैं। राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट सेवा के लिए उनको वर्ष 1974 में पद्मश्री और वर्ष 1982 में पद्म भूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ के निदेशक और कर्मचारी सदस्य दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हमारे सहकर्मी के दुखद निधन पर सी एम एफ आर आइ परिवार शोक प्रकट करते हैं।

श्री लक्ष्मण शंकर कोराबु
तकनीकी सहायक (स्किन डाइवर)
कारवार अनुसंधान केन्द्र,15.07.2015

समुद्री शैवालों से विकसित न्यूट्रास्यूटिकल

उत्पाद कडलमीन™ मधुमेह निवारक एक्स्ट्राक्ट (ADe)

कृपया पृष्ठ सं. 3 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।